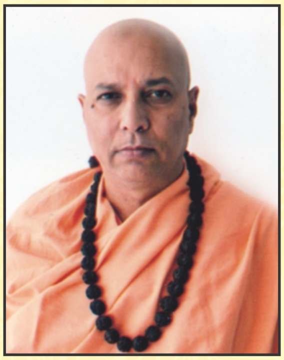

भक्तानन्द शिव मन्दिर **स्वामी संवित् सुबोधगिरि**

पन्द्रह अक्टूबर 1956 (विजयादशमी) को जन्मे स्वामी संवित् सुबोधगिरि ने दर्शन शास्त्र से एम.ए. (रांची विश्वविद्यालय 1980-81) कर अध्यात्म-साधना एवं भारतीय धर्म-दर्शन-संस्कृति-परम्परा एवं राष्ट्रीय इतिहास के अध्ययन में पूर्णकालिक प्रवृत्त।

एकेडमी ऑफ इंडियन कल्चर के संस्थापक डॉ. हरवंशलाल ओबराय के मार्गदर्शन में सांस्कृतिक इतिहास एवं भारतीय धर्म-दर्शन-संस्कृति पर व्यापक कार्य।

स्वामी देवानन्द ब्रह्मचारीजी (प्रेम मन्दिर आश्रम, रिषड़ा) से नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा और उनके सान्निध्य में साधना एवं स्वाध्याय—6 दिसम्बर 1992 से 12 मार्च 1999 तक। उन्हीं के निर्देश पर अनन्तश्री विभूषित पूर्वाम्नाय जगद्गुरु शंकराचार्य गोवर्धन पीठाधीश्वर स्वामी निश्चलानन्द सरस्वतीजी महाराज के सान्निध्य में स्वाध्याय एवं साधना—प्रति चतुर्मास में 1993 से 2000 तक नियमित, फिर अनियमित।

सम्प्रति स्वामी संवित् सोमगिरिजी महाराज से वैशाख शुक्ला पंचमी शुक्रवार शंकराचार्य जयन्ती 17 मई 2002 को संन्यास दीक्षा ग्रहण कर उनके सान्निध्य में स्वाध्याय, साधना एवं प्रकाशन का दायित्व निभाया—20 मार्च 1999 से 13 जून 2012 तक। डॉ. हरवंशलाल ओबराय समग्र (पांच खण्डों 2688 पृष्ठों में) संकलित, सम्पादित एवं प्रकाशित किया परमपूज्य महाराजश्री के आशीर्वाद से।

14 जून 2012 को भैरवगिरि मठ के महन्त परम श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्दगिरिजी महाराज एवं श्री लालेश्वर महादेव मन्दिर शिवबाड़ी के महन्त परम पूज्य स्वामी संवित् सोमगिरिजी महाराज, दोनों ने संयुक्त रूप से श्री नृसिंह भवन संन्यास आश्रम, भक्तानन्द शिव मन्दिर, भीनासर (बीकानेर) के महन्त पद का दायित्व देकर उस पर अभिषिक्त किया।

प्रकाशन

डॉ. हरवंशलाल ओबराय समग्र को खण्डशः विषयानुसार 25 पुस्तकों में प्रकाशित किया। समग्र में प्रकाशित पांच पुस्तकों में डॉ. ओबराय के साथ सुबोधगिरि सहलेखक हैं। समग्र से अतिरिक्त स्वयं सुबोधगिरि की पांच और पुस्तकें भी प्रकाशित—

(1) राष्ट्रीय समस्या और समाधान (प्रथम संस्करण, पृ. 88)

(2) राष्ट्रीय समस्या और समाधान (द्वितीय संस्करण, पृ. 312)

(3) गीता का पूर्व पक्ष और उत्तर पक्ष (गीता का पहला और दूसरा अध्याय)

(4) भक्तियोग (गीता का बारहवां अध्याय)

(5) भारतीय संस्कृति, पश्चिमी सभ्यता और विज्ञान
(6) भारतीय परम्परा में काम पुरुषार्थ
(7) योगेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण (संयुक्त)
(8) गीता की विश्वव्यापी प्रतिष्ठा (संयुक्त)
(9) भारतीय परम्परा में पुरुषार्थ चतुष्टय (संयुक्त)
(10) भारतीय परम्परा में नारी और मातृत्व के पंचविध रूप (संयुक्त)
(11) साक्षात् धर्म विग्रह प्रभु श्रीराम और भारतीय जीवन का अखण्ड प्रवाह (संयुक्त)

पूरे मठ का जीर्णोद्धार सम्पन्न हुआ। जन सहयोग से मन्दिर के लिए नये भवन का निर्माण, नव-निर्माण और अन्य नये आयाम भी जुड़ते जा रहे हैं। यू.आई.टी. अध्यक्ष श्रीमान् मकसूद अहमदजी के सहयोग से आश्रम के बाहर सीसी रोड का निर्माण हुआ। सन्त कुटीर का निर्माण श्री तरुण कुमार सोलंकी एवं श्रीमती सुशीला देवी के सहयोग से हुआ। विवेकानन्द वाचनालय का निर्माण (श्रीमान् गोपाल जोशी के) विधायक कोटे से हुआ। सांस्कृतिक भवन का निर्माण कार्य चल रहा है (श्रीमान् अर्जुनराम मेघवाल के) सांसद कोटे से। श्री मूलचन्द डागा के सहयोग से प्याऊ का निर्माण हुआ।

आगामी योजनाएं और कार्यक्रम

शौचालय, स्नानघर, रसोड़ा, भण्डार, मुमुक्षु आवास का निर्माण; सांस्कृतिक भवन का निर्माण कार्य पूर्ण होने के पश्चात् लॉन और बगीचा विकसित करना। सांस्कृतिक भवन में नियमित योग कक्षाओं का संचालन; साप्ताहिक बाल-संस्कार-केन्द्र संचालन; वर्ष में दो बार कथाओं का आयोजन। इसके अलावा भी छोटे-छोटे सेवा कार्य करना। भजन, सत्संग और देव-आराधन की व्यवस्था करना। इन सबके लिए जन सहयोग अपेक्षित है।

मो. 08278680977, 09413769139

डॉ. हरवंशलाल ओबराय

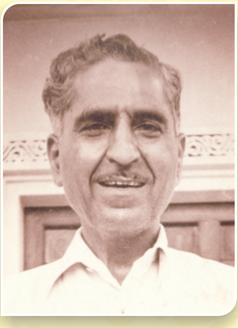

डॉ. हरवंशलाल ओबराय भारतीय संस्कृति के एक प्रतिष्ठित शोधकर्ता तथा प्रमुख विद्वान् थे। विश्व के देशों पर हिन्दू संस्कृति के अमिट प्रभाव के सम्बन्ध में गहन शोध तथा अध्ययन के क्षेत्र में श्री ओबराय का योगदान अप्रतिम रहा है। इस क्षेत्र में स्वामी विवेकानन्द, मदनमोहन मालवीय, लोकमान्य तिलक, आचार्य रघुवीर, डॉ. राधाकृष्णन जैसे महामनीषी तथा विद्वान् ही उनके प्रेरणास्रोत रहे हैं। डॉ. ओबराय दिल्ली एवं पंजाब विश्वविद्यालय के विभिन्न कॉलेजों में भारतीय संस्कृति एवं दर्शन शास्त्र के प्रोफेसर रहे तथा संस्कृति एवं दर्शन जैसे गूढ़ विषयों पर भारत के अनेक विश्वविद्यालयों में गहन शोध व्याख्यान दिए। विदेशों में भी इन्हें विशेष रूप से शोध व्याख्यान माला के लिए आमन्त्रित किया गया, इस व्याख्यान माला के अन्तर्गत डॉ. ओबराय ने 106 देशों की यात्राएँ की और कई देशों में तो कई-कई बार गये। इस तरह उनके व्याख्यानों की संख्या हजारों में बैठती है। इस यात्रा शृंखला में उन्होंने उन देशों में हिन्दू सम्राटों, साधु-संतों, बौद्ध भिक्षुओं द्वारा किए गए धर्म-प्रचार के अवशेषों का भी अध्ययन किया और वहाँ से पुरातात्त्विक महत्त्व के चित्रों, मूर्तियों और अभिलेखों की अनुकृतियाँ संग्रहित की। संन्यास से पूर्व विद्यार्थी जीवन में मेरी जिज्ञासा पर धर्म, दर्शन, संस्कृति, इतिहास, भारतीय संस्कृति का विश्वव्यापी प्रसार, राष्ट्रीय समस्याओं एवं महापुरुषों आदि विषयों को पढ़ाया-लिखवाया, समझाया और उन्होंने भी जो अनेक अवसरों पर अनेक लेख लिखे उन सबका संकलन सम्पादन पांच खण्डों में है। जो मेरे जीवन की मैं सर्वोत्कृष्ट उपलब्धि मानता हूं। बाबू जुगलकिशोर बिड़लाजी की प्रेरणा से

डॉ. ओबराय ने रांची में संस्कृति विहार की स्थापना की जिसके उद्घाटन समारोह की अध्यक्षा परमपूज्या श्रीश्री आनन्दमयी मां थी। उद्घाटन महामहोपाध्याय पं. गोपीनाथ कविराज ने किया। इस कार्यक्रम में मानव सेवा संघ के संस्थापक परम पूज्य स्वामी शरणानन्दजी सहित अनेक संतों एवं मनीषियों ने आशीर्वाद प्रदान किया। संस्कृति विहार के माध्यम से डॉ. ओबरायजी ने सम्पूर्ण छोटानागपुर के आदिवासी क्षेत्रों में भारतीय संस्कृति की ज्योति जगाई और उनके संरक्षण के लिए अनेक सांस्कृतिक कार्य तथा सेवाकार्य प्रारम्भ किए, जिसके परिणाम स्वरूप केवल छोटानागपुर में ही नहीं, अपितु बिहार के अन्य क्षेत्रों में भी एक अभूतपूर्व जागृति उत्पन्न हुई। विदेशी पादरियों द्वारा हिन्दुओं के सम्पूर्ण धर्मपरिवर्तन तथा अमानवीय अत्याचारों की बाढ़ को रोकने में उन्होंने सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। सितम्बर, 1983 में इन्दौर में हो रहे शिक्षा सम्मेलन में 'वेद और विज्ञान' विषय पर शोध-व्याख्यान देने के लिए जब वह इन्दौर जा रहे थे तो उसी यात्रा के दौरान वे रायपुर स्टेशन पर दुर्घटनाग्रस्त हो गये। उनके शोध ग्रंथ, सांस्कृतिक कार्य तथा सेवा-कार्य सदा उनकी महानता के परिचायक रहेंगे और वर्तमान तथा भावी पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्रोत बने रहेंगे।

प्रथम खण्ड में

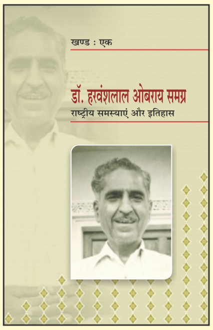

भारत का नेतृत्ववर्ग अपनी मूल हिन्दू संस्कृति से कटकर आत्मगौरवशून्य हो जाने के कारण विश्व की तीन अन्तरराष्ट्रीय शक्तियाँ—विश्व व्यापी ईसाई शक्ति, विश्वव्यापी इस्लामी शक्ति एवं कम्यूनिज्म की शक्ति आज धर्मप्राण भारत को शिकार का लक्ष्य बनाकर बड़े भीषण रूप से क्रियाशील हैं अतः भारत एवं भारतीयता की रक्षा हेतु विश्वव्यापी हिन्दू शक्ति के महाजागरण की आवश्यकता है। अपने विस्मृत स्वरूप-बोध को पुनः स्मरण करने की भी आवश्यकता है। भारत 'अग्रजन्मा' है, 'सा प्रथमा संस्कृति विश्ववारा' होने से, विश्व में आलोक भारत से फैला। जयशंकर प्रसाद कहते हैं—जगे हम लगे जगाने विश्व को, फिर फैला विश्व में आलोक। आज भी विश्व के इतिहास से चार पर्दे हटा दिये जायें—ईसा से पूर्व यूरोप, इसलाम से पूर्व अरब, कोलम्बस से पूर्व अमरीका और फिलीप से पूर्व फिलिपाइन तो आप स्पष्ट रूप से देखेंगे सारे विश्व में हिन्दू संस्कृति ही फैली हुई थी। इस खण्ड में चित्रावली भी संकलित है जो भारत के जगद्गुरु के पद को सिद्ध करती है। अतः भारत के अतीत का गौरवबोध, वर्तमान की पीड़ा और भविष्य के सपने संजो कर हम भारत का पुनः नवनिर्माण कर, भारत को पुनः जगद्गुरु के पद पर प्रतिष्ठित कर सकते हैं और विश्व में सुख-शांति का साम्राज्य निर्मित हो सकता है। यही अपेक्षा विश्व मनीषा को भारत से है। इसी आशाभरी दृष्टि से वह हमारी ओर निहार रहा है। इस खण्ड में राष्ट्रीय समस्याओं एवं उसके समाधान तथा इतिहास व भारतीय संस्कृति के विश्वव्यापी विस्तार से सम्बन्धित लेख संकलित हैं।

द्वितीय खण्ड में

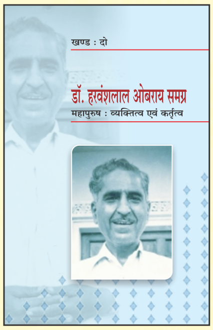

विश्व की प्राचीनतम सभ्यतायें जिन्होंने अपने राजनैतिक वैभव काल में प्रायः सारे विश्व को अपने अंक में समेट लिया था, वे छोटे-छोटे आघातों से सदा के लिए विलुप्त हो गईं जबकि भारतीय सभ्यता, संस्कृति दुर्भाग्य की सबसे अधिक ठोकरें खाकर भी चिरंजीवी बनी हुई है। भारत में ऐसी कौन-सी विशेषता है जिसके कारण आज भी वह चिरंजीवी बना हुआ है। सारे विश्व के विद्वान् इस पर आश्चर्यचकित हैं।

प्रत्येक युग का अपना एक स्वरूप होता है, उस युग की अपनी चुनौतियां होती हैं। उस युग व उसकी चुनौतियों को समझकर जो उसका उत्तर देने में समर्थ होती है वही संस्कृति चिरंजीवी होती है। वही समाज चिरंजीवी होता है। अपने देश में हर युग में ऐसे युगपुरुष, अवतारी पुरुष, महापुरुषों का पदार्पण होता आया है, निर्माण होता आया है जिन्होंने युग की

चुनौतियों को स्वीकार करते हुए इस देश का नेतृत्व किया। भारतीय जातीय जीवन के प्रत्येक युग में ऐसे-ऐसे आध्यात्मिक दिग्गज हुए जिन्होंने न केवल देश को वरन् सारे विश्व को प्रभावित किया है।

इस दृष्टि से देखें तो उत्तर भारत ने ऋषियों की परम्परा, अवतारों की परम्परा दी तो दक्षिण भारत से आचार्यों की परम्परा यथा—शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, मध्वाचार्य, वल्लभाचार्य, निम्बार्क, विष्णु स्वामी को पाते हैं। मध्यकाल में संस्कृति पर जब पुनः संकट आया तो ज्ञानेश्वर, नामदेव, तुकाराम, गुरु एकनाथ, समर्थगुरु रामदास, कबीर, तुलसी, सूर, मीरा व सिक्ख गुरुओं की परम्परा पाते हैं और आधुनिक काल में जब भारत की संस्कृति पर संकट आया तब रामकृष्ण परमहंस, महर्षि दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द, श्री अरविन्द, स्वामी रामतीर्थ, राजा राममोहनराय, रवीन्द्रनाथ टैगोर, महर्षि रमण और अनेक विप्लवी बंधुओं को पाते हैं। इस प्रकार भारतीय संस्कृति युग के अनुकूल महापुरुषों के निर्माण में समर्थ सिद्ध हुई है। इसलिये वह चिरंजीवी बनी हुई है। इस खण्ड में प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक के लगभग पैंसठ श्रेष्ठ महापुरुषों के जीवन पर नई दृष्टि से लेखक ने प्रकाश डाला है।

तृतीय खण्ड में

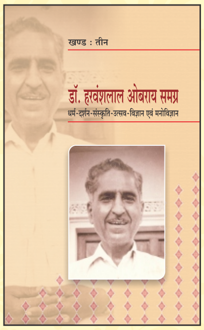

जहां विश्व के अन्य देशों के धर्म-दर्शन-संस्कृति विज्ञान के सामने नतमस्तक हैं, हतप्रभ हैं, भयभीत हैं; वहाँ एकमात्र भारतीय धर्म-दर्शन एवं संस्कृति ही आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के लिये चुनौती बनकर ऊंचा मस्तिष्क कर खड़ी है।

प्रत्येक देश का अपना एक वैशिष्ट्य, अपनी एक अपूर्वता, अपना एक स्वभाव होता है, उसका अपना एक व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व होता है जिसके आधार पर वह विश्व में श्रद्धा व घृणा का पात्र बनता है।

भारत की वाणी धर्म की वाणी है, पश्चिम की वाणी राजनीति की वाणी है। भारत राजनीति भी करता है तो वह धर्म से नियंत्रित और धर्म का एक अंग होती है और पश्चिम धर्म-प्रसार भी करता है तो वह उसकी राजनीति का एक अंग तथा साम्राज्य विस्तार का ही एक रूप होता है। भारत धर्म, दर्शन संस्कृति का तो घर है ही; इनका आदिस्रोत भी है जिसे विश्व मनीषा मुक्तकंठ से स्वीकारती है। पर सभ्यता, बहिर्विज्ञानों के विषय में उसे प्रथम स्थान न देकर द्वितीय स्थान दिया जाता है और उसका जनक पश्चिम को माना जाता है, जबकि वस्तुस्थिति इसके विपरीत है। आधुनिक वैज्ञानिक शोधों से भी सिद्ध होता है कि भारत 18वीं शताब्दी तक आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में भी सारे विश्व में आगे था और विज्ञान का जनक पश्चिम न होकर भारत ही है। जहाँ पश्चिम में 17वीं शती में धरती को गोल कहने पर गैलीलियो को कारागार में सता-सता कर मारा गया वहीं भारत की वैदिक परम्परा में भूगोल (भूमि गोल), खगोल, ब्रह्माण्ड, अखण्डमण्डलाकार आदि शब्द ही भारत को विज्ञान का जनक घोषित कर रहे हैं। इस खण्ड में हिन्दू दर्शन, शिव, गणेश, रामायण, गीता, धर्म-संस्कृति, उत्सव, विज्ञान एवं मनोविज्ञान पर विविध सारगर्भित लेख संकलित हैं।

चतुर्थ खण्ड में

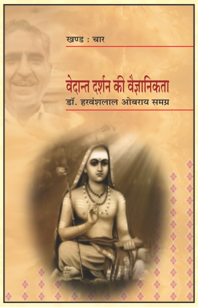

भारतीय दार्शनिक धारायें ऋतम्भरा प्रज्ञा द्वारा प्रसूत और अपौरुषेय वेद पर आधारित होने के कारण चिर प्राचीन होते हुए भी नित्य नवीन है, आधुनिक है, शाश्वत है, देश-कालातीत है। इसके विपरीत सेमिटिक विचार परम्परा और उसकी प्रतिक्रिया में उत्पन्न आधुनिक पाश्चात्य सभ्यता एवं कम्यूनिज्म की धारा सामयिक है और देश-काल में आबद्ध है। जो मानव प्रकृति के विरुद्ध व पर्यावरण की विरोधी होने से आज अप्रासंगिक सिद्ध हो रही है। इन विचारधाराओं से मानव इतिहास की, पर्यावरण की, ज्ञान-विज्ञान की अपार क्षति हुई है, उसकी पूर्ति विश्व मनीषा भारतीय दर्शन परम्परा में देख रही है। आज भारतीय धर्म-दर्शन व संस्कृति की विश्व में मांग बढ़ती जा रही है। विश्व स्तर पर वेद की,

योग की, आयुर्वेद की, गीता की, वेदान्त की, संस्कृत भाषा व भारतीय त्योहारों एवं विवाह की रस्मों, भारतीय परिवार व्यवस्था, पर्यावरण के प्रति उसकी दृष्टि आदि को मान्यता मिलती जा रही है। इस पुस्तक में भारतीय विचार परम्परा को आज के सन्दर्भ में समझने का प्रयास किया गया है और इसकी देशातीतता, कालातीतता व इसकी सार्वभौमिकता को वैज्ञानिक तर्क-पद्धति द्वारा स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

वास्तव में दर्शन के क्षेत्र में भारत विश्व का शिरोमणि देश है। भारत ने अन्तर्जगत् में डुबकी लगा कर जिन अमूल्य विचार-रत्नों की उपलब्धि प्राप्त की है उसके सम्मुख शेष विश्व की समस्त सम्पदा फीकी पड़ जाती है। यह दुर्भाग्य की बात है कि पश्चिम में लिखित अधिकांश दर्शन के इतिहास अपनी कथा यूनान से प्रारंभ करते हैं। यूनान में छठी शताब्दी ई. पू. से दार्शनिक चिन्तन प्रारम्भ होता है, जबकि भारत में यह काल प्रखर दार्शनिक वाद-विवाद का भास्वर, मध्याह्न काल है। पश्चिम में जब प्रथम दार्शनिक थेल्स अनुमान लगा रहा था कि सम्भवतः जल ही सृष्टि का परम सत्य है। उस समय तक भारत में वैदिक दर्शन, उपनिषदों का महानतम वेदांत-दर्शन, कल्पसूत्र, जैन एवं बौद्ध आचार्यों का दर्शन—सभी पूर्णतः विकसित एवं प्रतिष्ठित हो चुके थे। अतः विश्व में दर्शनशास्त्र का इतिहास भारत से प्रारम्भ होना चाहिए ना कि यूनान से।

पंचम खण्ड में

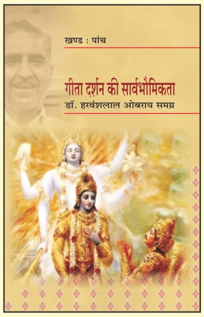

गीता दिव्य आध्यात्मिक संगीत है जिसे साक्षात् भगवान् श्री कृष्ण ने जीवन की कठोरतम परिस्थिति महासमर के समरांगण में गीत के माधुर्य के साथ गाया है। यह एक दार्शनिक गीत है जिसमें देशीय, कालीय एवं कर्मकाण्डीय तत्त्व न होने से तथा इसके वैचारिक जादू ने न केवल भारतीय मनीषा को वरन् विश्व मनीषा को अपने जन्म लग्न से आज तक आकृष्ट करता रहा है, शाश्वत एवं पूर्ण दर्शन है। इसकी तुलना निर्मल हीरे से की जा सकती है। हीरे से प्रकाश पाने के लिए उसे तराशना पड़ता है। गीता को कर्मयोग की दृष्टि से देखेंगे तो कर्मयोग का पूर्ण प्रकाश मिलेगा। ध्यानयोग की दृष्टि से देखेंगे तो ध्यानयोग का पूर्ण प्रकाश मिलेगा। भक्तियोग की दृष्टि से देखेंगे तो भक्तियोग का पूर्ण प्रकाश मिलेगा। ज्ञानयोग की दृष्टि से देखेंगे तो ज्ञानयोग का पूर्ण प्रकाश मिलेगा। आध्यात्मिक दृष्टि से देखेंगे तो गीता जैसा कोई ग्रंथ नहीं मिलेगा। अवतारी महापुरुषों की दृष्टि से देखेंगे तो भगवान् कृष्ण जैसा कोई व्यक्तित्व नहीं मिलेगा। देश के राष्ट्रीय जागरण व राष्ट्रीय मुक्ति-संग्राम में गीता का अविस्मरणीय योगदान है। भारत के प्रायः सभी स्वातन्त्र्य सेनानियों का यह नित्य पठनीय ग्रंथ रहा है। अहिंसा व हिंसा उभय पथ के समर्थक राष्ट्रीय मुक्ति-संग्राम के पथिकों का प्रेरणास्रोत गीता रही है। महात्मा गांधी के लिए गीता शान्ति व शक्ति प्रदायिनी माता थी। सुभाष बोस की भी गीता में अपार श्रद्धा थी। गीता केवल राष्ट्रीय मुक्ति-संग्राम को ही प्रेरणा देने वाला ग्रंथ नहीं है, इसने अन्तरराष्ट्रीय मुक्ति-संग्राम (विशेषकर जर्मनी, जापान, इंडोनेशिया, चेकोस्लोवाकिया, विएतनाम आदि) के साथ अन्तरराष्ट्रीय मैत्री भाव व विश्व-शान्ति को भी सम्बल प्रदान किया है। आज जाने-अनजाने में अपना राष्ट्र एवं सारा विश्व जिन समस्याओं से घिर गया है, उससे उबारने की क्षमता किसी ग्रन्थ में है तो वह भगवद्गीता में है, भगवान् कृष्ण में है। अमरीका का प्रसिद्ध दार्शनिक इमर्सन कहता है—जीव, जगत, धर्म एवं ईश्वर की कोई ऐसी समस्या नहीं है जिसका समाधान गीता के पास न हो। और सचमुच में गीता न केवल आध्यात्मिक, दार्शनिक, धार्मिक, नैतिक जगत् में वरन् जीवन के हर व्यावहारिक क्षेत्र में चाहे वह राजनीतिक जगत् हो, प्रशासनिक जगत् हो, व्यावसायिक जगत् हो, औद्योगिक जगत् हो, प्रबंधकीय जगत् हो, चिकित्सा जगत् हो, अपराध शमन जगत् हो, खेल जगत हो, मनोवैज्ञानिक जगत् हो, वैज्ञानिक जगत् हो, पर्यावरणीय जगत् हो, युद्ध क्षेत्र हो, शिक्षा जगत् हो इन सभी क्षेत्रों में गीता का सफल प्रयोग हो रहा है। इन सब क्षेत्रों की सफलता में गीता का विशिष्ट अवदान है—भारत के साथ-साथ विश्व-भर में।

डॉ. हरवंशलाल ओबराय समग्र

खण्ड 1 : राष्ट्रीय समस्याएं और इतिहास	पृष्ठ 448	₹ 400
खण्ड 2 : महापुरुष : व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व	पृष्ठ 424	₹ 400
खण्ड 3 : धर्म-दर्शन-संस्कृति-उत्सव-विज्ञान एवं मनोविज्ञान	पृष्ठ 412	₹ 400
खण्ड 4 : वेदान्त दर्शन की वैज्ञानिकता	पृष्ठ 700	₹ 700
खण्ड 5 : गीता दर्शन की सार्वभौमिकता	पृष्ठ 704	₹ 700

सम्पादक एवं संकलनकर्ता

स्वामी संवित् सुबोधगिरि

संकलन में सहयोगी

श्री वृजभूषण ओबराय

अंग्रेजी लेखों के हिन्दी अनुवादक

श्री चन्द्रप्रकाश ओबराय

आशीर्वचन

परम पूज्य गुरुदेव श्रीमत् स्वामी संवित् सोमगिरिजी महाराज

परामर्श मण्डल

श्री नरेन्द्र कोहली ◆ **श्री इन्द्रेश कुमार**
श्री बालकृष्ण नाइक ◆ **श्री बालमुकुन्द**
प्रो. रामेश्वर मिश्र 'पंकज' ◆ **डॉ. कुसुमलता केडिया**
श्री आनन्द मिश्र 'अभय' ◆ **डॉ. मदनलाल ओबराय**
श्री जुगलकिशोर जैथलिया ◆ **डॉ. बद्री प्रसाद पंचोली**
श्री सीताराम महर्षि ◆ **श्री तोलाराम लाठ**

प्रकाशक और वितरक :
स्वामी संवित् सुबोधगिरि
श्री नृसिंह भवन
संन्यास आश्रम, भक्तानन्द शिव मन्दिर
पो. भीनासर 334403
जि. बीकानेर (राजस्थान)
मो. : 08278680977, 09413769139

अन्य पुस्तक प्राप्ति स्थान :
श्री सुशील कुमार ताम्बी
प्रज्ञा साधना आध्यात्मिक पुस्तक केन्द्र
A/3 आर्य नगर
एन.के. पब्लिक स्कूल के पास
मुरलीपुरा, जयपुर 302039
फोन : 0141-2233765
मो. : 09829547773

जागृति प्रकाशन
श्री कृष्णानन्द सागर
एफ-109, सेक्टर-27
नोएडा 201301
दूरभाष : 0120-2538101
मो. : 09871143768

डॉ. ओबराय खण्डशः एवं सुबोधगिरि की पुस्तकें

1.	राष्ट्रीय समस्या और समाधान	₹ 250
2.	भारतीय दर्शन परम्परा	₹ 100
3.	रामायण का हार्द	₹ 100
4.	योगेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण	₹ 80
5.	गीता की विश्वव्यापी प्रतिष्ठा	₹ 80
6.	गीता ज्ञान की कुंजी	₹ 120
7.	गीता का पूर्व पक्ष और उत्तर पक्ष (गीता का प्रथम एवं द्वितीय अध्याय)	₹ 500
8.	गीता का मनोविज्ञान	₹ 125
9.	गीता में भक्ति योग	₹ 30
10.	भक्तियोग (गीता का बारहवां अध्याय)	₹ 100
11.	गीता का ज्ञान योग	₹ 40
12.	आत्मतत्त्व भारत की अमरता एवं स्वस्थ जीवन का राज	₹ 80
13.	जीवन रहस्य और मृत्यु रहस्य	₹ 25
14.	सृष्टि रहस्य, कर्म का सिद्धान्त तथा यज्ञ तत्त्व	₹ 50
15.	भारतीय दर्शन एवं विज्ञान का तुलनात्मक तत्त्वावलोचन	₹ 60
16.	भारतीय संस्कृति, पश्चिमी सभ्यता और विज्ञान	₹ 80
17.	मार्क्स के धर्मविषयक विचार की समीक्षा	₹ 20
18.	भारतीय परम्परा में काम पुरुषार्थ	₹ 40
19.	भारतीय परम्परा में पुरुषार्थ चतुष्टय	₹ 70
20.	भारतीय परम्परा में नारी और मातृत्व के पंचविध रूप	₹ 85
21.	भारतीय परम्परा में उत्सव	₹ 70
22.	मकर संक्रान्ति, विक्रम संवत् अग्रसेन जयन्ती	₹ 40
23.	हमारे आध्यात्मिक महापुरुष	₹ 150
24.	गोस्वामी तुलसीदास	₹ 50
25.	हमारे साहित्यकार	₹ 75
26.	हमारे स्वतंत्रता सेनानी	₹ 100
27.	सिख परम्परा, उनकी समस्या और समाधान	₹ 50
28.	विश्व भारत का चिर ऋणी है	₹ 300
29.	हमारी राष्ट्रीय समस्याएं	₹ 130
30.	साक्षात् धर्म विग्रह प्रभु श्रीराम और भारतीय जीवन का अखण्ड प्रवाह	₹ 1100
31.	वाङ्मय पर विद्वज्जन (डॉ. हरवंशलाल ओबराय और सुबोधगिरि की पुस्तकों पर टिप्पणियां)	निःशुल्क
	कुल	4100

आवेदन पत्र

माननीय....

सादर प्रभुवंदना।

गाजियाबाद में विश्व हिन्दू परिषद् की प्रबंध समिति की बैठक दिनांक 28-29 जून, 2012 को संपन्न हुई। इसके पूर्व 27 जून को प्रांत संगठन मंत्री, प्रांत सहसंगठन मंत्री, उपप्रांत संगठन मंत्री तथा क्षेत्रीय संगठन मंत्रियों की बैठक हुई। इस बैठक में माननीय महामंत्री श्री चम्पतरायजी ने श्रद्धेय डॉ. हरवंशलाल ओबरायजी का परिचय देते हुए उनके साहित्य के पांच खण्डों में प्रकाशन के विषय में बताया। इसकी जानकारी मा. श्री बालकृष्ण नाइक (उपाध्यक्ष, विश्व हिन्दू परिषद्) ने मुझे दी।

श्रद्धेय डॉ. ओबराय का व्यापक अध्ययन एवं शोधकार्य था। भारत की प्राचीन एवं अर्वाचीन ऋषि परम्परा तथा विश्व की प्राचीन एवं आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की परम्परा का उनका सम्यक् अध्ययन था। उनका समस्त लेखन चाहे संघ परिवार के कार्य हो, चाहे रामकृष्ण-मिशन के कार्य हो, चाहे अरविन्द आश्रम के कार्य हो, चाहे दिव्य जीवन संघ या भारत सेवाश्रम संघ हो या चिन्मय मिशन या स्वामी रामदेवजी हों, या आर्य समाज सभी के कार्यों को पुष्ट करने वाला तथा वैचारिक, सांस्कृतिक-दार्शनिक आधार प्रदान करने वाला है। उनका सम्पूर्ण लेखन आज के संदर्भ में है जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी काम आने वाला है तथा आज के युग की चुनौतियों का सम्यक् समाधान प्रस्तुत करने वाला भी है। हिन्दुओं को जितने विषय जानने चाहिए वे सब इसमें समाहित हैं। प्रत्येक भारतीय नागरिक जो भारतवर्ष से प्रेम करता है, उसके लिये यह ग्रंथ एक धरोहर है। इसे पढ़ने से एक हजार वर्षों के विदेशी आक्रमण, अत्याचार एवं उत्पीड़न के कारण जो हीन ग्रंथि सामान्य भारतीय के मन को दूषित कर रही है, उसका निवारण होकर पाठक आत्मगौरव के भाव से आप्लावित हो जाता है।

अतः यह एक राष्ट्रीय कार्य है, ईश्वरीय कार्य है जिसे अवश्य ही जन-प्रकाश में आना चाहिए। इसी दृष्टि से मैंने अपने पूरे जीवन को इस कार्य में लगाया है और मेरे जीवन की यही सर्वोत्कृष्ट उपलब्धि है।

इस कार्य की महत्ता को समझते हुए इसके प्रचार-प्रसार में आपका सहयोग अपेक्षित है। आपसे विनम्र निवेदन है कि आप स्वयं व्यक्तिगत रूप से डॉ. हरवंशलाल ओबराय समग्र पांच खण्डों में और खण्डशः विषयवार 30 पुस्तकों (जिसमें पांच पुस्तकें स्वामी संवित् सुबोधगिरि की है, उसमें भी डॉ. ओबरायजी की दृष्टि का खुलासा और विस्तार है) तथा पांच पुस्तकों में डॉ. ओबराय के साथ सहलेखन को खरीदें। अधिक से अधिक कार्यकर्ता बंधुओं को खरीदने के लिए प्रेरित करें तथा वाचनालयों, पुस्तकालयों में रखवाने की व्यवस्था करें। आप सब की कुशल-मंगल कामना ईश्वर से चाहता हूँ। शेष प्रभु कृपा के साथ।

आप सबका

स्वामी संवित् सुबोधगिरि

मोबाइल : 08278680977, 09413769139

विशेष द्रष्टव्य–

समग्र के पांचों खण्ड 2,688 (दो हजार छह सौ अट्ठासी) पृष्ठों में हैं। पांचों खण्डों का मूल्य 2600 (छब्बीस सौ) रुपये मात्र है। डाक खर्च अलग से 100 (एक सौ) रुपये है। अब इस समग्र को खण्डशः विषयवार 25 पुस्तकों में प्रकाशित कर दिया है। इसके अलावा पांच पुस्तकें स्वामी संवित् सुबोधगिरि की हैं। कुल 30 पुस्तकें 4,936 (चार हजार नौ सौ छत्तीस) पृष्ठों में है। मूल्य 4100 (चार हजार एक सौ) रुपये मात्र में उपलब्ध है। डाक खर्च अलग से 100 (एक सौ) रुपये हैं। मेरे बैंक खाते में 4200 (चार हजार दो सौ) रुपये जमा करके रजिस्टर्ड डाक द्वारा प्राप्त की जा सकती है और समग्र को सत्ताइस सौ में। मेरा अकाउंट नं. इस प्रकार है—

स्वामी संवित् सुबोधगिरि (Swami Samvit Subodh Giri) A/C No. 61217191109 (I.F.S.C. Code No. SBIN0031167)

मुद्रक : सांखला प्रिंटर्स, बीकानेर